मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद के हिंदी विभाग तथा दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में 02 और 03 सितंबर 2025 को “हिन्दी साहित्य में सूफ़ी काव्य परंपरा” विषय पर दो दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी सफलतापूर्व सम्पन्न हुई। यह संगोष्ठी न केवल अकादमिक विमर्श का केंद्र बनी, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना और आध्यात्मिक संवाद का एक जीवंत मंच भी सिद्ध हुई। दीप प्रज्वलन, स्वागत गीत और विश्वविद्यालय के तराने के साथ शुभारंभ ने वातावरण को गरिमामय बना दिया। उद्घाटन सत्र में कुलपति प्रो. सैयद ऐनुल हसन ने ऑनलाइन माध्यम से जुड़कर सूफ़ी काव्य परंपरा को प्रेम, समरसता और आध्यात्मिक एकता का प्रतीक बताते हुए इसके समकालीन महत्व को रेखांकित किया। कुलसचिव प्रो. एस. के. इश्तियाक़ अहमद ने इसे भारतीय संस्कृति की आत्मा बताते हुए सामाजिक सद्भावना के मूल्यों पर बल दिया। संगोष्ठी में चीन, अमेरिका, जापान सहित भारत के विभिन्न राज्यों से अनेक विद्वानों, शोधार्थियों और साहित्य प्रेमियों ने भाग लिया। प्रमुख वक्ताओं में डॉ. विवेक मणि त्रिपाठी, डॉ. अनीता कपूर, डॉ. ऋषिकेश कृष्णचंद्र मिश्रा और प्रो. सुधीर प्रताप सिंह शामिल रहे।

कुल छह मुख्य सत्रों में सूफ़ी काव्य की विविध धाराओं, प्रतीकों और सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभावों पर गहन चर्चा हुई, जबकि पाँच समानांतर सत्रों में युवा शोधार्थियों ने अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए। इन सत्रों ने संवाद और आलोचनात्मक विमर्श को प्रोत्साहित करते हुए संगोष्ठी को समावेशी और जीवंत मंच में परिवर्तित किया। संगोष्ठी के दौरान यह विचार प्रमुखता से उभरा कि सूफ़ी काव्य ने हिन्दी साहित्य को एक समावेशी और आध्यात्मिक दृष्टि प्रदान की है, जो आज के सामाजिक परिप्रेक्ष्य में अत्यंत प्रासंगिक है। एक विशेष सांस्कृतिक संध्या में शूजा एण्ड टीम द्वारा प्रस्तुत पारंपरिक कव्वाली ने साहित्य, अध्यात्म और संस्कृति के त्रैतीय समन्वय को सजीव रूप में प्रस्तुत किया। इस ऐतिहासिक आयोजन का संयोजन हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. पठान रहीम खान के नेतृत्व में प्रो. करन सिंह ऊटवाल, प्रो. जी. वी. रत्नाकर, प्रो. दोड्डा शेषु बाबु, डॉ. अबू होरैरा, डॉ. ज़ैनब खान, डॉ. साहिबा ख़ातून तथा विभाग के शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के सामूहिक प्रयास से हुआ। यह संगोष्ठी हिन्दी साहित्य में सूफ़ी काव्य परंपरा के पुनर्पाठ और पुनरावलोकन की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल सिद्ध हुई, जिसने साहित्यिक विमर्श को नई ऊर्जा और व्यापकता प्रदान की।